16.11.2017 DAINIK JAGRAN

धर्म और अध्यात्म का मर्म और अंतर समझा गए राष्ट्रपति

योगदा आश्रम में कोविंद ने किया 'ईश्वर-अर्जुन संवाद' पुस्तक का लोकार्पण

जागरण संवाददाता, रांची : राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि परमहंस योगानंद का संदेश अध्यात्म का संदेश है। धर्म से परे है अध्यात्म। यह सभी धर्मों का सम्मान करने का, विश्व-बंधुत्व का नजरिया है। वे मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए है, उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग-विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है।

राष्ट्रपति बुधवार को योगदा आश्रम में योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित परमहंस योगानंद की भागवत गीता पर हिंदी टीका 'ईश्वर-अर्जुन संवाद' के लोकार्पण के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह टीका समयानुकूल है। उपयोगी है। 1995 में यह अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि भाषाओं में छपी थी। हिंदी में यह पहली बार प्रकाशित हो रही है। हिंदी का विशाल पाठक वर्ग इस कृति से लाभान्वित होगा। हिंदी में उपलब्ध कराने के लिए स्वामी नित्यानंद भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि परमहंस ने अपनी टीका में गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया है। हर मनुष्य के अंदर चलने वाले युद्ध को उन्होंने गीता का विषय माना है। परमहंस के अनुसार गीता दैनिक जीवन के लिए एक पाठ्य पुस्तक भी है। वे कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है और इसे जीतना भी है। 'सही क्या है और गलत क्या है? क्या करें और क्या न करें? यह अंतर्द्वंद सबको परेशान करता है। ऐसे दोराहे पर निर्णय लेने में विद्वता की नहीं, बल्कि विवेक की जरूरत होती है।

आत्मसाक्षात्कार का राजयोग विज्ञान

राष्ट्रपति ने कहा, गीता पर अपनी टीका को परमहंस योगानंद आत्मसाक्षात्कार का राजयोग विज्ञान कहते हैं। वे आत्म-साक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं तथा राजयोग इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। यहां बैठे अधिकांश लोग योग की विभिन्न पद्धतियों से परिचित हैं। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने राजयोग पर विशेष जोर दिया था। राजयोग की वैज्ञानिकता के कारण पश्चिम के लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी राजयोग अधिक उपयुक्त लगता है।

अध्यात्म तथा कौशल का समन्वय

रामनाथ कोविंद ने कहा कि जो व्यक्ति गीता को अपने आचरण में ढालेगा, वह झंझावात में भी, स्थिर रहेगा, शांत रहेगा और सक्रिय रहेगा। प्राय: लोग सफलता-असफलता तथा जय-पराजय के चश्मे से सब कुछ देखते हैं। इस संदर्भ में गीता का कालजयी संदेश उसके अंतिम श्लोक में देखा जा सकता है- यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम...इस श्लोक का भाव है कि जहां योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन है, वहीं विजय भी सुनिश्चित है। इसका अर्थ यह है कि योग और दक्षता का समन्वय, तथा अध्यात्म तथा कौशल का समन्वय, विजय को सुनिश्चित करता है। गीता का अमर और जीवंत संदेश परमहंस योगानंद की टीका के माध्यम से बहुत लोगों तक पहुंचता है।

युवा पीढ़ी पर प्रभाव

प्रतियोगिताओं से घिरी आज की युवा पीढ़ी पर भी परमहंस योगानंद का गहरा प्रभाव है। कड़े संघर्ष के बीच विश्वस्तरीय सफलता और समृद्धि हासिल करने वाले नवयुवक उनकी पुस्तक योगीकथामृत को अपनी सफलता का श्रेय देते हैं। यह पुस्तक उन्हें जीवन में आगे बढ़ने का सही रास्ता दिखाती है। 70 साल पहले प्रकाशित और लगभग 45 भाषाओं में अनुवादित यह पुस्तक, जिसे दुनिया के लगभग 90 प्रतिशत लोग अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं, आज भी उतनी ही लोकप्रिय है।

योगदा सत्संग सोसाइटी में 'ईश्वर-अर्जुन संवाद' पुस्तक के विमोचन समारोह में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास, योगदा सत्संग के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद व महासचिव स्मरणानंद गिरि ■ जागरण